

दोस्तों की मदद से शुरू हुआ स्टार्टअप, अब बना हार्वर्ड की केस स्टडी

शिक्षक माता-पिता के घर जन्मे बायजू रविन्द्रन की दिलचस्पी टीचर बनने में नहीं बल्कि स्पोर्ट्स में थी। उस समय उन्हें अंदाजा नहीं था कि आगे चलकर वे एक एजुटेक आंत्रप्रेन्योर के रूप में पहचाने जाएंगे। बायजू की परवरिश केरल के एक छोटे से गांव में हुई थी। इंजीनियरिंग डिग्री लेने के बाद बायजू विदेश में नौकरी करने लगे। 2003 में वे दो महीने का ब्रेक लेकर जब भारत आए तो यह फैसला उनके लिए टर्निंग पॉइंट बना। बेंगलुरु में कैट की तैयारी करने वाले अपने दोस्तों की मदद करते हुए बायजू ने खुद भी वह परीक्षा दी।

बचत से शुरुआत

अब बायजू ने एंट्रेंस एग्जाम्स के लिए वीडियो फॉर्मेट का इस्तेमाल किया। 2011 में उन्होंने अपनी कंपनी थिंक एंड लर्न प्रा. लिमिटेड खोल दी। शुरुआत उन्होंने अपनी बचत के 2 लाख रुपये के निवेश से की। फिर उन्होंने अपने टीचर मित्रों के साथ स्मार्टफोन से टीचिंग का फैसला लिया। अगस्त 2015 में 'के-12' नामक लर्निंग एप लॉन्च कर दिया। अब तक बायजू के इस एप के 80 लाख डाउनलोड्स हो चुके हैं। देशभर में इसके 4 लाख पेड कस्टमर्स हैं। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी ने भी बायजू के एप को अपनी बिजनेस केस स्टडी में शामिल किया है।

कंपनी

थिंक एंड लर्न
प्राइवेट लिमिटेड

फाउंडर

बायजू रविन्द्रन

क्या खास

प्रतियोगी
परीक्षाओं की
तैयारी करने वाले
स्टूडेंट्स के लिए
बनाया लर्निंग एप



कैट में मिली कामयाबी ने बदली राह

कैट परीक्षा में बायजू का स्कोर 100 परसेंटाइल रहा। उनकी इस प्रतिभा से प्रभावित होकर दोस्तों ने उन्हें ट्यूशन देने के लिए कहा तो वे तैयार हो गए। कोचिंग की शुरुआत बायजू ने एक ऑडिटोरियम में ऑफलाइन तरीके से पढ़ाकर की। 100 स्टूडेंट्स से शुरू हुई इस क्लास में वर्ष 2007 तक 1 हजार स्टूडेंट्स थे। धीरे-धीरे वे बेंगलुरु से 9 शहरों में क्लास चलाने लगे। दो साल बाद वे ऑफलाइन से ऑनलाइन हो गए।